द्वेष्योऽपि सम्मतः शिष्टस्तस्यार्त्तस्य यथौषधम् ।

त्याज्यो दुष्टः प्रियोऽप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षता ।।28।।

अन्वय शिष्टः द्वेष्यः (सन्) अपि, आर्त्तस्य औषधं यथा तस्य सम्मतः आसीत्, दुष्टः प्रियः (सन्)अपि उरगक्षता अङ्गुली इव तस्य त्याज्यः आसीत्।

अनुवाद सज्जन (भला व्यक्ति) शत्रु होते हुए भी दिलीप को वैसे ही प्रिय था जैसे रोगी को कड़वी औषधि प्रिय होती है। दुष्ट (मनुष्य) प्रिय होते हुए भी वैसे ही त्याज्य था जैसे सांप से डसी अंगुली। (राजा दिलीप पक्षपात रहित थे। शिष्ट व्यक्ति ही उसका मित्र और दुष्ट ही उसका शत्रु था।)

टिप्पणियां

द्वेष्यः द्विष् यत्, शत्रु, घृणा के योग्य।

शिष्टः सभ्य, उत्तम, सुशिक्षित (व्यक्ति), धातु शास् इट् क्त।

सम्मतः अनुमत, प्रिय, इष्ट।

उरगक्षता उरगेन क्षता (तृतीया तत्पुरुष), उरग (सांप के द्वारा) क्षता (काटी गई)-अंगुली का विशेषण।

सब प्राणियों को अपने शरीर के अंग प्रिय होते हैं और सदा उनकी रक्षा करते हैं, उन्हें कष्ट से बचाते हैं। परन्तु जब हमारे हाथ-पैर आदि अंगों को सांप काट लें और सारे शरीर में सर्पविष फैलने की आशंका हो तो हम उसे (अपने अंग को) प्रिय होने पर भी काट देते हैं। इसी प्रकार राजा दिलीप का प्रिय व्यक्ति भी यदि दुष्टता करता था तो वे उसे प्रिय होने पर भी दण्ड देने से हिचकिचाते नहीं थे। देखिए:

छिन्द्याबाहुमपि दुष्टमात्मनः।